ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 371-372

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16, YEAR- June -2020

पिछड़ी जातियों का राजनीतिक संस्कृति एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

संजीव कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर समाजशास्त्र विभाग द्वारिका नाथ महाविद्यालय, मसौढ़ी– पटना (बिहार), भारत

Received- 26.06.2020, Revised- 29.06.2020, Accepted - 03.07.2020 E-mail: - dr.ramnyadav@gmail.com

सारांश : *राजनीतिक समाजीकरण, समाजीकरण की वह प्रक्रिया है, जो राजनीतिक क्षेत्र में होती है। इसलिए राजनीतिक समाजीकरण की व्याख्या के लिए समाजीकरण की अवधारणा को समझना आवश्यक है। सभी प्रकार की सीखने की प्रक्रिया को समाजीकरण नहीं कहा जा सकता। केवल कुछ सीखने या ज्ञान प्राप्त करने की वही प्रक्रिया समाजीकरण कही जा सकती है जिसमें social relivence पाया जाए। यदि कोई व्यक्ति यह सीखता है कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर अपनी धुरी पर नाचते हुए घूमती है या दो या दो मिलकर चार चार होते हैं, या प्रकाश की गति 18,6000 मील प्रति सेकंड होती है, तो इसे सीखने की प्रक्रिया तो कहा जा सकता है, परंतु इसे समाजीकरण की प्रक्रिया नहीं कहा जा सकता। इसके अतिरिक्त सीखने की प्रक्रिया एक चेतन की प्रक्रिया होती है, जबकि समाजीकरण की प्रक्रिया चेतन भी हो सकती है और अचेतन भी। वास्तव में वे सीखने की प्रक्रिया जिसके द्वारा व्यक्ति अपने समाज की संस्कृति से परिचित होता है, समाजीकरण की प्रक्रिया कहलाती है। इसी बात की चर्चा जॉनसन ने इन शब्दों में की है– "what is learnt in socialization is culture."*

कुंजीभूत शब्द– राजनीतिक, समाजीकरण, प्रक्रिया, अवधारणा, आवश्यक, ज्ञान, घूमती, प्रकारा, अतिरिक्त।

ऊपर की व्याख्या के आधार पर यह कहा जा सकता है कि यदि राजनीतिक क्षेत्र में संस्कृति सीखने और इससे संबंधित नियमों को अपनाने की प्रक्रिया होती है तो इसे राजनीतिक समाजीकरण कहा जा सकता है। आर.एस. सीगल ने कहा है कि– "राजनीतिक समाजीकरण का अभिप्राय सीखने की उस प्रक्रिया से है जिसके द्वारा स्वी.त राजनीतिक आदर्श एवं व्यवहार पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानांतरित होता है।" डासन तथा प्रिविट ने कहा "राजनीतिक समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक नागरिक राजनीतिक दृष्टि से परिपक्व होता है।"

राजनीतिक समाजीकरण के अनेक साधन होते हैं जिसके द्वारा एक व्यक्ति का राजनीतिक समाजीकरण होता है। राजनीतिक समाजीकरण के अभिकरण के क्षेत्र में परिवार, स्कूल एवं अन्य शिक्षण संस्थाएँ, समूह या मित्र मंडली, राजनीतिक दल, राजनीतिक प्रतीक, रोजगार के अनुभव, जनसंपर्क की भूमिका इत्यादि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

राजनीतिक संस्कृति– राजनीतिक संस्कृति सामान्य संस्कृति का एक उपभाग है। इसके अंतर्गत राजनीतिक विचारों, मूल्यों, अभिवृत्तियों, राजनीतिक व्यवहारों एवं अभिमुखीकरण आदि तत्वों को सम्मिलित किया जाता है। राजनीतिक संस्कृति शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग 1966 में ग्रोवियल आमण्ड ने किया । राजनीतिक संस्कृति की परिभाषा विद्वानों ने भिन्न–भिन्न तरह से दी है:–

राजनीतिक समाजीकरण के द्वारा राजनीतिक संस्कृति उत्पन्न होती है। पंचायती राज में भी एक राजनीतिक संस्कृति का विकास हो रही है । यह राजनीतिक संस्कृति जनमत से जुड़ा हुआ है। राजनीति संस्कृति में जनमत का विशेष महत्व होता है। अतः प्रस्तुत अध्ययन में जनमत तथा पिछड़ी जातियों के सदस्यों के राजनीतिक संस्कृति का भी अध्ययन किया गया है। जनमत के निर्माण में पिछड़ी जाति के सदस्यों की भूमिका बढ़ती जा रही है।

जनमत– जनमत के अर्थ को स्पष्ट करते हुए एल0डब्लू डूब ने कहा है कि "जनमत का अर्थ किसी एक विषय पर एक ही समुदाय के सदस्यों की मनोवृत्तियों से है।" यह स्पष्ट होता है कि जनमत केवल समुदाय के साधारण सदस्यों के मतों का संग्रह ही नहीं है, बल्कि यह उन व्यक्तियों के मतों का संग्रह है जिन्हें समुदाय में अभिरुचि है और जो समुदाय के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। जनमत के अनेक साधन हैं। रेडियो, समाचार पत्र, भाषणों, संपादकीय लेखों, संचार साधनों, इंटरनेट, जाति पंचायत द्वारा जन्म के विचारों और व्यवहारों को नियंत्रित किया जाता है।

आरक्षण प्रदान करने के संबंध में वाद –विवाद होता है। ग्राम सभा के कमजोर होने की बात कही जाती है। इस प्रकार कई तरह की चर्चा की जाती है । इन बातों को जानना प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य है।

उपकल्पना– प्रस्तुत अध्ययन के लिए निम्नलिखित

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16, YEAR- June -2020

उपकल्पना– प्रस्तुत अध्ययन के लिए निम्नलिखित उपकल्पनाओं का निर्माण किया गया है:–

(1) राजनीति में सेवा भावना से लोग नहीं आते हैं।

(2) मतदान की एवज में आर्थिक लाभ की भावना बढ़ती जा रही है ।

(3) मतदाताओं को आकर्षित करने के लिए जाति का सहारा लिया जाता है।

(4) पंचायत चुनाव में राजनीतिक दलों के नेताओं का प्रभाव बढ़ रहा है।

अध्ययन का क्षेत्र– प्रस्तुत अध्ययन के लिए जहानाबाद जिला के काको प्रखंड के सभी ग्राम पंचायतों को अध्ययन क्षेत्र के रूप में चयन किया गया।

निदर्श– काको प्रखंड के 18 ग्राम पंचायतों में कुल 50 पिछड़ी जाति के पंचायत निर्वाचित सदस्यों का चयन किया गया ।

आंकड़ा संकलन की प्रविधि– प्राथमिक आंकड़ों का संकलन के लिए अनुसूची प्रविधि का निर्माण तथा प्रयोग किया गया।

तथ्य विश्लेषण

तालिका संख्या–1

	हां	नहीं	योग
(क) क्या पंचायत की राजनीति में अब बहुत दाव–पेंच का अनुभव करते हैं?	35 70.0	15 30.0	50 100.0
(ख) क्या वर्तमान दौर में मूल्य की राजनीति का विशेष महत्व है?	22 44.0	28 56.0	50 100.0
(ग) क्या अब राजनीति में सेवा की भावना से लोग नहीं आते हैं?	37 74.0	13 26.0	50 100.0
(घ) क्या कुछ मतदान किसी उम्मीदवार के पक्ष में मतदान के लिए आर्थिक लाभ भी उठा लेते हैं?	42 84.0	08 16.0	50 100.0

प्रस्तुत तालिका का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि 70– पिछड़ी जाति के पंचायत प्रतिनिधियों ने कहा है कि पंचायत के राजनीति में आप बहुत दाँव–पेंच का अनुभव करते हैं। 30– उत्तरदाताओं ने नकारात्मक उत्तर दिया। 44– पिछड़ी जाति के पंचायत प्रतिनिधियों का मानना है कि वर्तमान दौर में मूल्य की राजनीति का विशेष महत्व है जबकि 56–उत्तरदाताओं ने नकारात्मक उत्तर दिया। 74–पिछड़ी जातियों के पंचायत प्रतिनिधियों का मानना है कि अब राजनीति में सेवा की भावना से लोग नहीं आते हैं, जबकि 26– प्रतिनिधियों ने नहीं में उत्तर दिया। 84–पिछड़ी जाति के पंचायत प्रतिनिधियों ने कहा कि कुछ मतदान किसी उम्मीदवार के पक्ष में मतदान के लिएआर्थिक लाभ भी उठा लेते हैं जबकि 16–उत्तरदाताओं ने नकारात्मक उत्तर दिया।

तालिका संख्या–2

	हां	नहीं	योग
(क) क्या पंचायत के चुनाव में नशा सेवन का बाजार गर्म रहता है?	30 60.0	20 40.0	50 100.0
(ख) क्या उम्मीदवार अपने पक्ष में मतदाताओं को आकर्षित करने के लिए जाति का सहारा लेते हैं?	39 78.0	11 40.0	50 100.0
(ग) क्या पंचायत के चुनाव में राजनीतिक दल के नेता भी सक्रिय रहते हैं?	38 76.0	12 24.0	50 100.0
(घ) क्या जन प्रतिनिधि आप गांधीवाद के प्रति विशेष लगाव नहीं रखते हैं?	43 84.0	08 16.0	50 100.0
(ङ) क्या चुनाव की प्रक्रिया में सुधार आवश्यक है?	40 80.0	10 20.0	50 100.0

प्रस्तुत तालिका का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि 60– पिछड़ी जातियों के पंचायत प्रतिनिधियों ने कहा कि पंचायत के चुनाव में नशा सेवन का बाजार गर्म रहता है जबकि 40–उत्तरदाताओं ने नहीं में उत्तर दिया। 78– पिछड़ी जातियों के पंचायत प्रतिनिधियों ने कहा कि उम्मीदवार अपने पक्ष में मतदाताओं को आकर्षित करने के लिए जाति का सहारा लेते हैं । 22– उत्तरदाताओं ने नकारात्मक उत्तर दिया। 76– पिछड़ी जातियों के पंचायत प्रतिनिधियों ने कहा कि पंचायत के चुनाव में राजनीतिक दल के नेता भी सक्रिय रहते हैं। 24– उत्तरदाताओं ने नकारात्मक उत्तर दिया। 84–मतदाताओं ने कहा कि जनप्रतिनिधि आप गाँधीवादी के प्रति विशेष लगाव नहीं रखते हैं जबकि 16– उत्तरदाताओं ने नकारात्मक उत्तर दिया। 80– पिछड़ी जातियों के पंचायत प्रतिनिधियों ने कहा कि चुनाव की प्रक्रिया में सुधार आवश्यक है।

निष्कर्ष– पिछड़ी जातियों के पंचायत प्रतिनिधियों में राजनीति संस्ति का विकास तेजी से हो रहा है। वे पिछड़ी जातियों के पंचायत प्रतिनिधियों पर संचार साधनों का प्रभाव पड़ने के कारण राजनीतिक विकास के मार्ग पर अग्रसर हो रहे हैं। परिणामस्वरूप उनमें राजनीतिक सहभागिता बढ़ा है। वे अब विभिन्न जागरूकता के प्रति अपना .ष्टिकोण उजागर कर रहे हैं । वे सत्ता की राजनीति में विशेष विश्वास करते हैं । चुनाव की राजनीति में हिंसा का भी सहारा लिया जाने लगा है। गाँधीवाद का नारा तो खूब दिया जाता है लेकिन व्यवहार ठीक इसके विपरीत हो रहा है। पंचायत प्रतिनिधियों में भ्रष्टाचार की संस्ति उत्पन्न हुई है भाई–भतीजावाद, गुटबाजी, दलबंदी जैसी संकीर्ण विचारों के कारण एक स्वस्थ्य राजनीतिक संस्कृति का विकास का अभाव ग्रामीण क्षेत्रों में देखने को मिलता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ0 डी0एस0 बघेल एवं डॉ0 टी0पी0 सिंह कर्चुली : राजनैतिक समाजशास्त्र, विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली ।
2. नगीना प्रसाद : समाज मनोविज्ञान, प्रकाशक, किताब महल, थार्नहिल रोड, इलाहाबाद ।
3. पॉवेल जे0 : एनाटोमी ऑफ पब्लिक ऑपेनियन प्रेनटिस हॉल, न्यूयार्क ।
4. रॉबर्ट सिगल : पॉलिटिकल थ्योरी ए फिलोसोफिकल पर्सपेक्टिव, इंडियन पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली ।

*****